क्योंकि किसी धर्मी के लिए भी कोई मरने को तैयार नहीं होता…

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

प्रश्न:
रोमियों 5:7 में लिखा है:

“क्योंकि किसी धर्मी के लिए कोई मरता भी नहीं; पर किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का साहस कर सकता है।”
इसका क्या अर्थ है? और “धर्मी” और “भला मनुष्य” में क्या
अंतर है?

उत्तर:
प्रभु यीशु की स्तुति हो, प्रिय परमेश्वर के सेवक।
आपका प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है, आइए हम इस वचन को मिलकर समझें।

सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि प्रभु यीशु केवल खुले पापियों—जैसे हत्यारे, अपराधी, भ्रष्ट लोग—को बचाने नहीं आए, बल्कि वे उन “भले” लोगों को भी बचाने आए जो समाज में अच्छे माने जाते हैं।

क्योंकि किसी धर्मी के लिए भी कोई मरने को तैयार नहीं होता…

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

रोमियों 5:7 में प्रेरित पौलुस दो प्रकार के लोगों में अंतर कर रहा है: एक “धर्मी” और दूसरा “भला मनुष्य”।

धर्मी व्यक्ति कौन होता है?

धर्मी व्यक्ति वह होता है जो परमेश्वर की दृष्टि में पूर्ण है—निर्दोष, निष्कलंक और पवित्र। ऐसा व्यक्ति, सच कहें तो, कभी इस धरती पर नहीं हुआ। यदि होते, तो प्रभु यीशु के आने और क्रूस पर मरने की कोई आवश्यकता नहीं होती। फिर उद्धार का क्या अर्थ होता? यदि कुछ लोग अपने आप में पहले से ही पूरे, निर्दोष और परमेश्वर के योग्य होते, तो फिर यीशु क्यों आते?

इसीलिए लिखा है:

“क्योंकि किसी धर्मी के लिए कोई मरता भी नहीं;”
(रोमियों 5:7a – Pavitra Bible: Hindi O.V.)

क्योंकि धर्मी व्यक्ति के लिए कोई अपना प्राण नहीं देगा—शायद इसलिए कि ऐसा व्यक्ति आत्म-धर्मी होता है और उसमें वह प्रेम और संबंध नहीं होते जो दूसरों को बलिदान के लिए प्रेरित करें।

क्योंकि किसी धर्मी के लिए भी कोई मरने को तैयार नहीं होता…

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

भला मनुष्य कौन होता है?

भला मनुष्य वह होता है जो पूर्ण नहीं है, परंतु अच्छा बनने की कोशिश करता है। वह समाज में नियमों का पालन करता है, लोगों की मदद करता है, दयालु होता है, न्यायप्रिय होता है। फिर भी, उसकी अच्छाई परमेश्वर की दृष्टि में पूर्णता नहीं है। उसके सारे प्रयास, सारी मेहनत, उसे परमेश्वर के सामने “धर्मी” नहीं बना सकते।

इसलिए आगे लिखा है:

“पर किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का साहस कर सकता है।” (रोमियों 5:7b – Pavitra Bible: Hindi O.V.)

ऐसा व्यक्ति दूसरों की सहानुभूति और स्नेह जीत सकता है, और कोई शायद उसके लिए जान भी दे दे—क्योंकि वह प्रेमपूर्ण और विनम्र होता है। फिर भी वह भी उद्धार का ज़रूरतमंद है।

पूरे सन्दर्भ में देखें:

जब हम ऊपर का वचन भी पढ़ते हैं, तो बात और स्पष्ट हो जाती है:

क्योंकि किसी धर्मी के लिए भी कोई मरने को तैयार नहीं होता…

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

“क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा।
क्योंकि किसी धर्मी के लिए कोई मरता भी नहीं; पर किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का साहस कर सकता है।
परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की सिफारिश इस रीति से
करता है, कि जब हम पापी ही थे, तब मसीह हमारे लिये मरा।” (रोमियों 5:6–8 – Pavitra Bible: Hindi O.V.)

यहां प्रेरित पौलुस कहता है कि जब हम निर्बल थे—अर्थात् अपनी धार्मिकता या भलाई से परमेश्वर को प्रसन्न करने में असमर्थ—तभी मसीह हमारे लिए मरा। हम चाहे कितने भी अच्छे क्यों न हों, हम स्वयं को नहीं बचा सकते।

निष्कर्ष:

यदि हम वास्तव में स्वयं को धर्मी बना सकते, तो मसीह के आने की कोई आवश्यकता नहीं थी। लेकिन क्योंकि सब लोग—चाहे पापी हों या भले—परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, इसलिए सबको यीशु की ज़रूरत है।

“क्योंकि सब ने पाप किया है, और परमेश्वर की महिमा के योग्य

क्योंकि किसी धर्मी के लिए भी कोई मरने को तैयार नहीं होता…

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

नहीं रहे।”
(रोमियों 3:23 – Pavitra Bible: Hindi O.V.)

इसलिए हमें मसीह की आवश्यकता है—चाहे हम कितनी भी अच्छी धार्मिकता या सामाजिक सेवा क्यों न करें, यीशु के बिना हम परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

प्रभु आपको आशीष दे!

कृपया इस सुसमाचार को दूसरों के साथ भी बाँटें।

प्रार्थना, आराधना समय, सलाह या प्रश्नों के लिए संपर्क करें: � +255693036618 या +255789001312

यदि आप ये शिक्षाएँ व्हाट्सएप या ईमेल द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं, तो उपरोक्त नंबरों पर हमें संदेश भेजें।

क्योंकि किसी धर्मी के लिए भी कोई मरने को तैयार नहीं होता…

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp